आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 20/12/2023; Published: 26/12/2023

***लेख***

# राष्ट्र कवि सुब्रह्मण्यम भारती

- **प्रो.प्रतिभा मुदलियार**

प्रो.प्रतिभा मुदलियार, **राष्ट्र कवि सुब्रह्मण्यम भारती**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023,(535-537)

सुब्रमण्यम भारती का जन्म 11 दिसंबर, 1882 को मद्रास प्रेसीडेंसी के 'एट्टायपुरम' में हुआ था। उनकी मृत्यु 11 सितंबर, 1921 को हुई। वे राष्ट्रवादी काल (1885-1920) के भारतीय लेखक थे, जिन्हें आधुनिक तमिल शैली का जनक माना जाता है। उन्हें **'महाकवि भारथियार'** के नाम से भी जाना जाता है। सामाजिक न्याय को लेकर उनकी मज़बूत भावना ने उन्हें आत्मनिर्णय और सम्मान हेतु लड़ने के लिय प्रेरित किया। वर्ष 1904 के बाद वे तमिल दैनिक समाचार पत्र **'स्वदेशमित्रन'** से जुड़ गए। राजनीतिक मामलों के साथ उनके इस जुड़ाव के कारण वे जल्द ही **'भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस' (INC)** के चरमपंथी विंग का हिस्सा बन गए।

सुब्रमण्यम भारती ने अपने क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने हेतु लाल कागज़ पर 'इंडिया' नाम का साप्ताहिक समाचार पत्र छापा। यह तमिलनाडु में राजनीतिक कार्टून प्रकाशित करने वाला पहला पेपर था। उन्होंने 'विजय' जैसी कुछ अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन भी किया। उन्होंने काँग्रेस के वार्षिक सत्रों में हिस्सा लिया और बिपिन चंद्र पाल, बी.जी. तिलक तथा वी.वी.एस. अय्यर जैसे चरमपंथी नेताओं के साथ राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के बनारस सत्र (1905) और सूरत सत्र (1907) के दौरान

उनकी भागीदारी एवं देशभक्ति के प्रति उनके उत्साह ने कई राष्ट्रीय नेताओं को प्रभावित किया। वर्ष 1908 में उन्होंने 'स्वदेश गीतांगल' प्रकाशित किया। भारती भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य भी थे। 1908 में ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा भारती के खिलाफ उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया था, जिसके कारण उन्हें पुडुचेरी जाना पड़ा, जहां वे 1918 तक रहे।

वर्ष 1917 की रूसी क्रांति को लेकर सुब्रह्मण्यम भारती की प्रतिक्रिया 'पुड़िया रूस' (द न्यू रशिया) नामक कविता प्रसिद्ध हुई थी, जो कि उनके राजनीतिक दर्शन का एक आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत करती है। उन्हें एक फ्राँसीसी उपनिवेश 'पांडिचेरी' (अब पुद्दुचेरी) भागने के लिये मज़बूर होना पड़ा, जहाँ वे वर्ष 1910 से वर्ष 1919 तक निर्वासन में रहे। इस अवधि के दौरान की सुब्रह्मण्यम भारती की राष्ट्रवादी कविताएँ और निबंध काफी लोकप्रिय थे।

**उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं** 'कण पाणु' (वर्ष 1917; कृष्ण के लिये गीत), 'पांचाली सपथम' (वर्ष 1912; पांचाली का व्रत), 'कुयिल पाउ' (वर्ष 1912; कुयिल का गीत), 'पुड़िया रूस' और 'ज्ञानारथम' (ज्ञान का रथ)। उनकी कई अंग्रेज़ी कृतियों को 'अग्नि' और अन्य कविताओं तथा अनुवादों एवं निबंधों व अन्य गद्य अंशों (1937) में एकत्र किया गया था।

**मातृभाषा के प्रति प्रेम** - अपनी मातृभाषा तमिल पर उन्हें एक माँ की तरह भक्ति एवं स्नेह था। तमिल की उन्नति के लिए वे आजीवन प्रयत्नशील रहे। छोटे बच्चों के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या देशीय भाषा को चुनने का कहते थे। विदेशी भाषा अँग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने के सख्त वे खिलाफ थे। उनकी दिली इच्छा थी कि बचपन से बच्चे अपने माता-पिता, परिवार, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा के प्रति आदर और स्नेह करना सीख लें। वे तमिल काव्य की सुदीर्घ परंपराओं से परिचित थे तथा लोक साहित्य और लोकगीत परंपराओं के प्रति आकृष्ट भी थे। उसे आत्मसात करते हुए उन्होंने नए काव्य का सृजन किया था। भारती ने वचन कविता अर्थात गद्य कविता को प्रारंभ कर वर्तमान 'तमिल नई कविता' के लिए मार्ग प्रशस्त किया। भारती के जन्म के समय तमिल भाषा तथा तमिलजनों की अवस्था अच्छी नहीं कही जा सकती थी। तमिल भाषा को पुर्नजीवित कर एक तरह से उन्होंने तमिलजन को तंद्रा से जगा कर आत्मविश्वास और आस्था के पौधे को पल्लवित किया। हम सब पर उनका ये बहुत बड़ा उपकार है। उन्हें मातृभाषा या राष्ट्रभाषा से ही प्रेम था ऐसा नहीं है। उन्होंने संत त्यागराज के भजन गाने के लिए तेलुगू सीखा तो कभी फ्रेंच या जर्मन। वे किसी भी कार्य में उतरने से पहले उसकी प्रारंभिक आवश्यकताओं को पुख्ता करने को कहते।

अपनी व अन्य प्रसिद्ध तमिल रचनाओं का उन्होंन बहुत सुंदर अँग्रेजी अनुवाद किया था। अरविंद घोष की अँग्रेजी पत्रिका 'आर्य' में प्रकाशित हुई। 'आर्य' में ही 'ए फॉक्स विथ दी गोल्डन टेल' भी प्रकाशित हुई थी। इसके अलावा एनी बेसंट की 'न्यू इंडिया' तथा 'कॉमन वील' पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुई। आगे चल कर सन 1937 में पुस्तकाकार रूप में इसका प्रकाशन हुआ। सन 1937 में ही उनके आलेखों का एक संग्रह भी प्रकाशित हुआ। भारती द्वारा लिखित साहित्य का दायरा बहुत विस्तृत था जिसमें धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक पहलू शामिल थे। भारती द्वारा लिखे गए गीतों का व्यापक रूप से तमिल फिल्मों और संगीत समारोहों में उपयोग किया जाता है।

सुब्रह्मण्य भारती जी की प्रारंभिक कविताओं में तमिल राष्ट्रवाद का उल्लेख मिलता है, किन्तु स्वामी विवेकानंद के प्रभाव में आने के बाद उनकी जीवन के उत्तरार्ध में लिखी कवितायें भारतीय हिन्दू राष्ट्रवाद का गुणगान करती हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा में स्वीकार किया कि यह परिवर्तन उनकी गुरु भगिनी निवेदिता और स्वामीजी के कारण उत्पन्न हुआ। देशभक्ति से ओतप्रोत स्वामीजी के भाषणों द्वारा पैदा की गई विचारों की चिंगारी का असर वीर सावरकर तथा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रभक्तों पर भी दिखाई देता है।

भारती की उपाधि - सुब्रह्मण्य भारती ने माता पिता को खोने के दु:ख को अपने काव्य में ढाल लिया। इससे उनकी ख्याति चारों ओर फैल गयी। स्थानीय सामन्त के दरबार में उनका सम्मान हुआ और उन्हें 'भारती' की उपाधि दी गयी।

निधन- भारती 1918 में ब्रिटिश भारत में लौटे और उन्हें तुरंत गिरफ़्तार कर लिया गया। उन्हें कुछ दिनों तक जेल में रखा गया। बाद के दिनों में उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा और 11 सितंबर, 1921 को मद्रास में उनका निधन हो गया। भारती 40 साल से भी कम समय तक जीवित रहे और इस अल्पावधि में भी उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में काफ़ी काम किया। उनकी रचनाओं की लोकप्रियता ने उन्हें अमर बना दिया।

**********